वचनिका की कथावस्तु

मंगलाचरण में अपनी आराध्यदेवी तथा वीणावादिनी सरस्वती का स्तवन कर कवि अपनी कथा का श्रीगणेश करता है—'साइ सारदा मनि संवरि बांधउं ग्रंथ अपार।' वचनिकाकार शिवदास को अपनी साहित्यिक क्षमता का पूर्ण विश्वास है, पर इसकी सच्ची कसौटी तब ही होगी जब भविष्य के राजागण इसे अपनी-अपनी राजसभाओं में एकचित्त हो सुनेंगे— 'आगिलउ राजा सभा सहित सुचित सुई सुणाइ, तउ सुकवि कुकवि की पारिखा जणाइ।'

सर्वप्रथम वचनिकाकार मांडू के बादशाह हौशंगशाह (अपर नाम अलपखां, आलमखां, गौरी) की शक्ति और पराक्रम का परिचय कराता हुआ कहता है कि प्रचण्ड शक्ति के सम्मुख सभी हिन्दू राजा नत-शिर हो गये हैं—'नमिया सकल नरेस।' अचळदास खोची पर आक्रमण करते समय इसकी विशाल वाहिनी, मालवा के बारह लाख चक्रवर्ती राजा और तिरानवे लाख सैनिकों से युक्त थी। उसके चारों पुत्र उसमानखान, गजनीखान, फतहखान और हैबतखान इस

Scanned by CamScanner

विशाल वाहिनी के सेनानायक थे। मुगीसखान उसका विश्वासपात्र फुफेरा भाई था, जो उसकी सेना में सम्मिलित था।[31]

मांडूपति हौशंगशाह की इस सेना में अनेक पराक्रमी हिन्दू राजा थे जिनमें खेरला का राजा नरसिंह प्रमुख है। उसकी विशाल सेना का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि जब वह प्रस्थान करती तो यदि हरावल पानी में होता तो मध्यभाग के आते-आते वहाँ कीचड़ हो जाता और अंतिम भाग के वहाँ से गुजरने पर तो उसी स्थान से गर्द उड़ने लग जाती थी।[32] वह पराक्रम में दूसरा विक्रमादित्य था।[33]

स्वातंत्र्य वीर अचळदास और नरसिंह जैसे नरेशों की तुलना करते हुए वचनिकाकार शिवदास ने कहा है कि यद्यपि सिंह और हाथी दोनों वन में रहते हैं, दोनों ही शक्तिशाली हैं, फिर भी उनमें ऐसा क्या अन्तर है कि सिंह को कोई कौड़ी में भी नहीं खरीदता जबकि हाथी एक लाख रुपये में बिकता है। अन्तर है, हाथी का अपने गले में बंधन डलवा देना अर्थात् पराधीनता स्वीकार कर लेना—

गइवर गळइ गळत्थियउ, जहं खंचइ तहं जाइ।
सहि गळत्थण जइ सहइ, तउ दह लक्खि विकाइ॥

बादशाह की सेना में अन्य हिन्दू राजाओं में मातंगपुरी का लखमराव, नरसिंह के दो पुत्र चांदजी और खेमजी, बूँदी का राजा तथा नीमाड़ के मानधाता सम्मिलित थे।

आज जबकि महापराक्रमी सिवाना के सोम सातल, जालोर के कान्हड़दे, रणथम्भौर के हमीर, सीहोर का रावल और तिलकछपरी का गहलोत नहीं रहा, कौन ऐसा हिन्दू नरेश है जो अलपखां के सम्मुख आँख उठा सके? केवल अचळदास ही ऐसा है, जो बादशाह के परुष वचन सुनकर, कुपित हो युद्ध करने को तैयार हो गया। वह धन्य है। उसका साहस प्रशंसनीय है।

एक दिवस में चौरासी दुर्गों को अपने अधिकार में करने वाला दुर्धर्ष गौरी झंझावत् आगे बढ़ा और गागरोण गढ़ से चार कोस की दूरी पर शिविर डालकर गागरोण गढ़ को चारों ओर से घेर लिया। इधर अचळदास ने भी युद्ध की तैयारियाँ शुरू कर दीं। गढ़ के सारे निवासियों की उसने एक बैठक बुलाई। सबको प्ररोचित कर अपना जौहर दिखाने को कहा।

---

31. दीनानाथ खत्री द्वारा संपादित अचलदास की वचनिका के 'इतिहास की दृष्टि से परीक्षण' के लेखक डॉ. दशरथ शर्मा, पृ. 3।
32. डॉ. आलमशाह खान ने अपने ग्रन्थ 'राजस्थानी वचनिकाएँ' पृ. 27 पर हौशंगशाह की सेना के प्रस्थान से पानी के स्थान पर कीकड़ और कीचड़ के स्थान पर गर्द उड़ने का जो वर्णन किया है, वह सही नहीं है, वह वर्णन वास्तव में नरसिंह की सेना का है।
33. हौशंगशाह की सेना में विक्रमादित्य नामक कोई दण्डोपनत राजा नहीं था, जैसा कि डॉ. दशरथ शर्मा ने लिखा है (पृ. 4)। वास्तव में यहाँ विक्रमादित्य की तुलना नरसिंह से की गई है, 'दुसरउ विक्रमादित्य'।

Scanned by CamScanner

बादशाह ने अचळदास को समझाने के लिए अपना दूत भेजा, अचळदास के कुछ सामन्तों ने भी समझाने का प्रयत्न किया, पर उसने दो टूक उत्तर दिया कि मैं न तो गढ़ छोड़कर भागूँगा और न ही नतशिर होऊँगा—'नवइ न खींवी नीव गढ थी गढ मेल्ही करी।'

अपने पति अचळदास की दृढ़ता को देखर सभी पत्नियाँ बड़ी प्रसन्न हुईं। उन्होंने अपने पति को प्रोत्साहित किया। पुष्पावती ने कहा कि मैं तीनों कुलों का नाम रोशन कर दूँगी—

'हउं ऊजाळिसि आपणा त्रेवे पख तिणि ताळि'

कछवाही ने कहा कि—जब समर में भयंकर बाण-वर्षा हो रही होगी, हे प्रियतम मैं आपकी रक्षार्थ आपके आगे आकर खड़ी हो जाऊँगी—

बहु वेलुक वरसंत कोटे कछवाही कहइ।
तो आडी होइसउं तठइ हउं कोसीसां कंत।।

इसी प्रकार सांखली, तूंवरिणी और बागड़नी ने भी उसको प्रोत्साहित किया।[34] इन सबके निर्भीक वचनों से अन्य सामन्त भी बड़े प्रोत्साहित हुए। अचळदास ने सबसे भेंटना प्रारम्भ किया। सर्वप्रथम वे राजकुमार पाल्हणसी से भेंटे। मिलन-विधि समाप्त होने के बाद वचनिकाकार ने अचळदास के सामन्तों का वर्णन करते हुए यह भी बतलाया है कि क्षत्रियों के साथ-साथ अन्य सामन्त ब्राह्मण, चारण और बनिये भी थे।

इधर अचळदास की माता सफलादे आदि अनेक रानियों के साथ दूसरी चालीस सहस्र स्त्रियाँ पलक मारते ही जौहर करने के लिये तत्पर हो गईं।

उधर गौरी ने गढ़ को चारों ओर से घेर कर व्यूह-रचना कर ली थी। अन्ततः दोनों के बीच घमासान युद्ध हुआ। बादशाह और अचळदास भिड़ गये। बाणों की बौछार होने लगी, रक्त की धाराएँ बहने लगीं। कबंध नाचने लगे। सैनिक युद्ध करने में ऐसे लीन हो गये कि वीरों की भूख-प्यास मिट गई और रात-दिन का अन्तर समाप्त हो गया। हिन्दुओं ने अद्वितीय शौर्य और कुशलता का प्रदर्शन किया। परिणाम यह आया कि एक हिन्दू एक सहस्र यवनों को मार कर मरता था—

पिडि जेता हींदू पड़इ तेता सहस तुरक्क।

यह विकराल युद्ध होमाष्टमी को प्रारम्भ होकर दूसरी अष्टमी तक अर्थात् पन्द्रह दिन चला। इसमें दोनों दलों का आधा-आधा भाग मृत्यु के मुख में चला गया।

अन्तिम बार अचळदास के सामन्तों की एक बैठक हुई। सबने यह स्वीकार किया कि हमें प्राणों का मोह छोड़कर शत्रु सेना पर टूट पड़ना चाहिए। नाथू डोड ने सुझाया कि हमें गले

---

34. सांखली रानी बागड़ देश की न थी, जैसा डॉ. आलमशाह खान ने लिखा है, वास्तव में बागड़नी भी एक रानी थी, पृ. 29। सांखली तो जांगलू देश की थी। दीनानाथ खत्री द्वारा संपादित वचनिका, डॉ. दशरथ शर्मा की भूमिका, पृ. 6।

Scanned by CamScanner

में तुलसी माला धारण कर गौरी के शिविर पर धावा बोल देना चाहिए। हमारा एक-एक डग एक-एक अश्वमेध के बराबर होगा।

जौहर के लिये चालीस सहस्र स्त्रियाँ तैयार हो गईं। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार कथीर सोने को नहीं जीत सकता, उसी प्रकार गौरी हमें नहीं जीत सकता। अचळदास ने उन्हें रणथम्भौर आदि जौहरों का स्मरण कराते हुये, उनसे भी श्रेष्ठ जौहर करने को कहा। इसके पूर्व पाल्हणसी को समझाया गया कि वह युद्ध से विरत हो जाये। सबके समझाने से यह अन्ततः मान जाता है। वचनिकाकार शिवदास को भी इस युद्ध का प्रत्यक्षदर्शी वर्णन करने तथा अचळदास की यशगाथा गाने के लिये युद्ध से विरत होने के लिये समझाया जाता है।

जौहर के लिए अग्नि प्रज्वलित की गई। वीरांगनाओं में होड़ लगी हुई थी। हरि-हरि और विष्णु-विष्णु का नाम लेती हुई इन क्षत्राणियों ने जौहर की अग्नि में प्रवेश किया।

फिर क्या था? गागरोण गढ़ के द्वार खोल दिये गये। अचळदास की सेना शत्रु पर टूट पड़ी। असंख्य लोग युद्ध में मारे गये। स्वयं अचळदास ने अनेक शत्रुओं को मृत्यु की गोद में सुलाया और अन्त में वीरगति को प्राप्त हुआ। लोक और परलोक दोनों में उसने अपना नाम अमर कर दिया--'संसारि नांव आतम सरगि, अचल बेवि कीधा अचल'।

वचनिका की कथा अत्यन्त संक्षिप्त है। अनेक स्थानों पर वाक्यों की पुनरावृत्ति होते हुये भी इसकी सरलता और रोचकता में आँच नहीं आती है। इसका प्रतिपाद्य है—राजपूतों की आन-बान, युद्ध और जौहर। राजपूतों के साथ लड़े गये प्राचीनकाल के लगभग सभी युद्धों में इन्हीं तीन वस्तुओं का पुनरावर्तन मिलेगा। तत्कालीन जीवन के ये आदर्श स्तम्भ बन गये थे। वीरांगनाओं का जौहर की ज्वालाओं से आलिंगन करना और वीरों का गढ़ का द्वार खोलकर शत्रु सैन्य पर टूट पड़ना, कथा का चरमोत्कर्ष है और अचळदास के अन्त के साथ ही कथा का भी अन्त हो जाता है। कथा में अतिरंजना है, पर वह घटनाक्रम में बाधक नहीं है। अपने कथानायक के शौर्य को उद्घाटित करने के लिये हर युद्ध-वर्णन में अतिरंजना हो ही जाती है। साथ ही यह भी सत्य है कि इसमें कोरी कल्पना की उड़ानें नहीं हैं। न तो इसमें अप्सरायें ही आती हैं और न खप्पर लिये रक्त-लालायित जोगिनियाँ। न इसमें भूतप्रेतादि शवों पर नृत्य करते हुये दिखाई देते हैं और न मुण्डमाला धारण किये भैरवगण।

गद्य हो या पद्य, सम्पूर्ण कथा प्रवाहपूर्ण ढंग से गन्तव्य की ओर बढ़ती हुई अपना प्रभाव छोड़ती जाती है। कवि का उद्देश्य युद्ध और जौहर का वर्णन करना ही रहा है। जौहर के वर्णन में कवि का मन अधिक रमा है। और कहना होगा कि कथावस्तु के आवश्यक तत्त्वों को सुनियोजित करने में उसे पूर्ण सफलता मिली है।

Scanned by CamScanner